

टमाटर

प्रमुख रोग व कीट प्रबन्धन

टमाटर रोग व आर्द्र पतन:

यह एक कवक रोग है जो सभी प्रकार की मिट्टी में हो सकता है। प्रभावित पौध उगने से पहले या तुरंत बाद गिर कर खत्म हो जाते हैं। रोगी बीज काफी मुलायम, भूरा या काले रंग का हो जाता है तथा दबाने पर आसानी से फट जाता है। यदि बीज से अंकुर निकल भी रहे हों तो वे जमीन से बाहर निकलने से पहले ही सड़ जाते हैं। भूमि की सतह के पास पौध के तने पर भूरे रंग के जलीय तथा नरम धब्बे बनते हैं। रोगी भाग काफी कमजोर पड़कर सिकूड़ जाता है। फलस्वरूप पौध उसी स्थान से टूटकर या मुड़कर नीचे गिर जाती है। पत्तियों का पीला पड़ना और मुरझाकर सूख जाना इस रोग की मुख्य पहचान है। जिससे नर्सरी में खाली स्थान दिखाई देने लगते हैं।

प्रबंधन

- पौधशाला की क्यारी भूमि से ऊपर उठी होनी चाहिए।
- पौधशाला में पानी के ठहराव से बचा जाना चाहिए।
- पौधशाला में अच्छा जल निकास प्रबंधन होना चाहिए।
- ट्राइकोडर्मा विरडी (4 ग्राम, किग्रा) या स्त्र्यूडोमोनास (10 ग्राम, किग्रा) से बुवाई से 24 घंटे पहले बीज को उपचारित करें।
- स्त्र्यूडोमोनास फ्लूओरेसेंस को गोबर की खाद के साथ (5 किलो /50 किलो प्रति हेक्टेयर) मिश्रित कर मिट्टी में मिलायें।
- कॉपर ओकसीक्लोराइड (25 ग्राम/ लीटर) से नर्सरी क्षेत्र को भिगोयें।
- बीज को ब्लाइटैक्स (25 ग्राम / लीटर) से उपचारित करें।

पछेती अंगमारी:

पत्ते पर पछेती अंगमारी के लक्षण सबसे पहले छोटे, पानी से लथपथ जैसे दिखाई देते हैं जो तेजी से बैंगनी-भूरे रंग, तेल जैसे दिखने वाले धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं। पत्तियों के निचले हिस्से की ओर भूरा सफेद रूई और बीजाणु के गठन संरचनाओं के छल्ले धब्बों के चारों ओर दिखाई दे सकते हैं। पूरे पत्ते सूख जाते हैं और संक्रमण जल्दी से पर्णवृन्त और युवा तने में फैल जाता है। संक्रमित फल भूरे रंग का हो जाता है लेकिन माध्यमिक क्षय जीवों से संक्रमित रहते हैं। आमतौर पर लक्षण फल के ऊपरी भाग से शुरू होकर भूमि की तरफ बढ़ता है।

प्रबन्धन

- डाइथेन एम-45 (2: ग्रा/ लीटर) या क्लोरोथोलोनिल 25 इब्ल्यू पी (कवच) का 2 ग्रा/ लीटर का छिड़काव करना चाहिए।

पूर्ण कुंचन (लीफ कर्ल):

यह टमाटर की प्रमुख बीमारी है जिसमें पत्तियां नीचे की तरफ मुड़कर ऐठ जाती हैं। रोगग्रस्त पत्तिया छोटी, मोटी एवं खुरदरी हो जाती हैं। पत्तियों का रंग पीला पड़ जाता है। इस बीमारी के भयानक रूप धारण करने पर आमतौर पर संक्रमित पौधों पर गठित फूल विकसित नहीं हो पाते हैं और नीचे गिर जाते हैं। अगर पौधों में संक्रमण जल्दी हो जाता है तो फल उत्पादन नाटकीय रूप से बहुत ही कम हो जाता है और उपज में भारी गिरावट आ जाती है।

प्रबन्धन

- सभी संक्रमित पौधों को निकाल देना चाहिए और आगे फैलने से बचने के लिए इन्हें नष्ट कर देना चाहिए।
- कोन्फिडोर 200 एस. एल. 100 मि.ली./ 500 लीटर पानी में घोल बनाकर रोपाई के 3 सप्ताह बाद तथा आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

सफेद मक्खी:

इस कीट के शिशु व वयस्क दोनों ही पत्तों से रस चूसते हैं। इनके द्वारा बनाये गए मधु बिन्दु पर काली फफूंद आ जाती है जिससे पौधे का प्रकाश संश्लेषण कम हो जाता है। यह कीट वायरस जनित “पती मरोड़क” (लीफ कर्ल) बीमारी भी फैलाता है।

प्रबन्धन

- रोपाई से पहले पौधों की जड़ों को आधे घंटे के लिए इमिडाक्लोप्रिड 1 मि.ली./3 लीटर के घोल में डुबोएं।
- नर्सरी को 40 मेष की नायलॉन नेट से ढक कर रखें
- नीम बीज अर्क (4 प्रतिशत) आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।
- पीले चिपकने वाले ट्रैप का प्रयोग करें

टमाटर फल छेदक:

इस कीट की सूंडियां फलों में छेद करके फलों के गुदे को खा जाती हैं। ये कीट फलों से आधे बहार लटके हुए नजर आते हैं। फल पर किए गए छेद गोल होते हैं और केवल छेद के अंदर ऊपरी हिस्से को ही ये कीट खाते हैं। एक सुंडी कई फलों को नुकसान पहुंचा सकती है। ये सुंडी फलों के साथ साथ पत्तियों को भी नुकसान पहुंचाती है।

प्रबन्धन

- टमाटर की प्रति 16 पंक्तियों पर ट्रैप फसल के रूप में एक पंक्ति गेंदे की फसल लगाएं।
- सूड़ियों वाले फलों को इकट्ठा कर नष्ट कर दें।
- इस कीड़े की निगरानी के लिए 20 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगाएं।
- जरूरत पड़ने पर नीम बीज अर्क (5 प्रतिशत) या एन.पी.वी. 250 एल. ई./ हेक्टेयर या बी.टी. 1 ग्राम/ लीटर पानी या इमामेक्टिन बेन्जोएट 5 एसजी. 1 ग्राम/2 लीटर या स्पिनोसैड 45 एस. सी. 1 मि.ली./4 लीटर पानी का इस्तमेल करें।
- पानी का बेसिलस थुरिजेंसिस 2 ग्रा/लीटर या फ्लूबेंडिएमाइड 20 डब्ल्यू जी 5 ग्रा /10 लीटर या इंडोक्सकार्ब 5 एस सी 8 मिली / 10 लीटर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

पत्ती सुरंगक कीट: (लीफ माइनर):

इस कीट के शिशु पत्तों के हरे पदार्थ को खाकर इनमें टेडी मेडी सफेद सुरंग बना देते हैं इससे पौधों का प्रकाश संश्लेषण कम हो जाता है। अधिक प्रकोप होने से पत्तियां सूख जाती हैं।

प्रबंधन

- ग्रसित पत्तियों को निकालकर नष्ट कर दें।
- इमिडाक्लोप्रिड 1 मि.ली./ 3 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।